>

Title: Need to take all necessary steps to bolster the Rupee as well as the economy of the country.

श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी (अहमदनगर): डॉलर के मुकाबले रूपये की कीमत में आई भारी गिरावट ने कई सवाल खड़े किये हैं । डॉलर जब पचपन रूपये के बराबर पहुंच गया था तभी यह उम्मीद की जा रही थी कि इसे संभालने के लिए सरकार या रिजर्व बैंक की ओर से कोई कदम उठाया जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ । रूपये का अवमूल्यन जारी रहा । रूपये की कीमत में आयी गिरावट से व्यापार असंतुलन भी बढ़ गया और घाटा भी । इससे आयात खर्च बढ़ा, जिसका सीधा असर महंगाई पर हुआ है । देश में तेल खपत का तीन चौथाई कच्चा तेल आयात होता है । इस पर बढ़े खर्च की भरपाई तेल कंपनियां डीजल/पैट्रोल/रसोई गैस के दाम बढ़ाकर करेगी । फिर परिवहन, माल-ढुलाई का खर्च बढ़ेगा इसका असर लगभग सभी चीजों की मूल्यवृद्धि के रूप में दिखाई देगा । आगामी मौद्रिक समीक्षा में ब्याज दर घटाये जाने की कोई उम्मीद नहीं दिखती । परेशानी की इस सूरत में बाहरी निवेशकों का भरोसा बढ़ाने के लिए कई क्षेत्रों में विदेशी निवेश बढ़ाने की चर्चा चल रही है । इससे आम आदमी पर बोझ बढ़ेगा । बाहरी निवेशकों का भरोसा दिलाने के लिए विदेशी संस्थागत निवेशकों पर यह शर्त लागू करनी चाहिए कि वे अपना पैसा तीन साल से पहले न ले जा सकें । अगर ऐसा नहीं किया तो देश का विदेशी मुद्रा संकट और गहरा सकता है । आम आदमी के हित के लिए उचित कदम उठाए जाएं यही हमारी मांग है ।